“<u>हरिद्वार महाकुम्भ सृजन संकल्प</u>”

22 मार्च, 1998

भारत को आज़ाद हुए पचास वर्ष से अधिक समय गुजर गया है और स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में जिस भारत की कल्पना की गई थी उसके कहीं आसार नहीं दिखायी पड़ते हैं। देश ने उन्नती की है लेकिन जो कुछ इस देश की गरीब जनता और गाँवों के लिए किया जाना था उससे बहुत कम ही किया जा सका है। गाँवों के देश भारत में गाँव दुबले होते चले गये और शहर मोटे होते गये हैं। आज स्थिति यह है कि शहरों का मोटापा इतना बढ़ गया है कि उनका पेट फूटने वाला है और जनसंख्या विस्फोट और गन्दी बस्तियों की त्रासदी सर पर है। इस परिस्थिति के लिए देश का राजतंत्र और समाज, उसकी प्रतिभाएँ, उसके धनपति और नागरिक सभी किसी न किसी सीमा तक जिम्मेदार हैं। यदि देश को इस परिस्थिति से उबारना है तो इन सभी को अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुरूप संकल्प लेने होंगे और उन्हें पूरा करने के लिए प्राण पण से जुटना होगा।

हरिद्वार महाकुम्भ इस सहस्त्राब्दि और इस सदी का अंतिम महापर्व है जिसमें एक करोड़ से अधिक भारतवासी गंगा स्नान के लिए आयेंगे। वे सभी भावनाशील देशवासी अपने हृदय में भारत के उत्थान का स्वप्न लेकर यहां आयेंगे जिसे मूर्त रूप देने के लिए वे संकल्प लेकर यहां से लौटेंगे। यहीं से तदनुरूप भारत के पुनरूत्थान का संदेश वे देश के कोने–कोने में ले जायेंगे। उनके इस स्वप्न को संकल्प के रूप में व्यक्त करने के उद्देश्य से देश के जाने माने समाज सेवी व्यक्ति और संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 21–22 मार्च 98 को इस युग के महान् समाज सुधारक तथा प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की साधनास्थली शान्तिकुंज्ज, हरिद्वार में आयोजित हुआ, जहां इस संकल्प को ‘<u>हरिद्वार महाकुम्भ सृजन संकल्प</u>’ के नाम से अंगीकार किया गया और इस प्रकार व्यक्त किया गया–

सृजन संकल्प

हम भारत के नागरिक देश की स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूर्ण होने तथा इस सहस्त्राब्दि एवं सदी के अंतिम महाकुम्भ के अवसर पर संकल्प लेते हैं कि हम ग्राम, कृषि, पशुपालन और कुटीर उधोग प्रधान भारत राष्ट्र के उत्थान के लिए–

1. अपने समय और साधनों के एक निश्चित अंश को नियमित रूप से ग्रामोत्थान के लिए नियोजित करेंगे।
2. अर्थ व्यवस्था को विकेन्द्रित करने के उद्देश्य से गौ संवर्धन के लिए गौशालाओं का राष्ट्रव्यापी तंत्र स्थापित कर कुटीर उद्योग एवं गौचर केन्द्रित कृषि और हरीतिमा संवर्धन के लिए अपना योगदान निर्धारित करेंगे।
3. परिवार और समाज के सुचारू संचालन के लिए नर और नारी में समानता एवं परस्पर मृदुल व्यवहार को प्रोत्साहित करेंगे
4. हर परिवार के स्वास्थ्य और गर्भवती माँ की सुरक्षित प्रसव व्यवस्था बनाने तथा हर बच्चे के समुचित विकास और पोषण के लिए अपना योगदान निर्धारित करेंगे
5. सादगी, शाकाहार, तुलसी रोपण, नशा निवारण, विद्यारंभ, श्रम और उद्योग वृति का प्रसार कर हर गाँव को स्वावलम्बी, स्वस्थ, समृद्ध और सुखी बनायेंगे

स्वतंत्र स्वावलम्बी महान् भारत के नव निर्माण का हमारा मंत्र है '**अब गाँव वापस चलें**'

और हम अपेक्षा करते हैं :–

1. **राजतंत्र से**
   - ☞ हर नागरिक की सुचारू सुरक्षा व्यवस्था
   - ☞ जन सेवाओं में लगे कार्मिकों से सदाशयता और मृदुल व्यवहार
   - ☞ नागरिकों की जायज शिकायतों के न्यायपूर्ण समाधान की सुदृढ़ व्यवस्था
   - ☞ नीतियाँ जो सकारात्मक जन आकांक्षाओं को उभरने में और पल्लवित तथा पुष्पित होने में सहायक सिद्ध होंगी

☞ अनुदान जो जनहित के ईमानदार प्रयासों को प्रोत्साहित करेंगे

2. <u>भारतीय समाज से</u>

☞ राजतंत्र की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखें

☞ अंधविश्वासों और मूढ़ मान्यताओं का अनुसरण करने वालों का सामाजिक बहिष्कार करें

☞ दहेज प्रथा और खर्चीली शादियों को हतोत्साहित करें

☞ भिक्षावृति को हतोत्साहित करें

☞ सादगी, विधार्जन,श्रम और उद्योग वृति को सम्मान और प्रोत्साहन दें

3. <u>प्रतिभाओं से</u>

☞ सामाजिक कुरीतियों से मुकाबला करने में पीछे न रहें

☞ सकारात्मक जन आकांक्षाओं को दिशा देने में समयदान दें

☞ जनहित के ईमानदार प्रयासों में अपनी प्रतिभा लगायें

☞ समाज के विपन्न लोगों के कष्ट निवारणार्थ सक्रिय रहें

☞ राजतंत्र और समाज को अपनी प्रतिभा से जागृत और जीवन्त बनाएँ

4. <u>धनपतियों से</u>

☞ जनहित में लगे प्रतिभाशाली व्यक्तियों को समर्थन दें,

☞ विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को सम्मानित करने की व्यवस्था बनाएँ

☞ भारत के गृह और ग्रामोद्योगों के उत्पादों के विपणन के लिए सुनिश्चित बाजार का निर्धारण करें

☞ पर्यावरण संरक्षण एवं सन्तुलन के लिए उपयुक्त तकनीक को प्रोत्साहन और उसमें प्रशिक्षण तथा शोध की व्यवस्था बनाएँ

☞ धन के बेजा प्रदर्शन से परहेज करें और सादगी अपनाएँ

हम निम्र हस्ताक्षरकर्ता अनुरोध करते हैं, हर भारतवासी से जो इस संकल्प को पढेगा या सुनेगा कि वे भी इसे अंगीकार कर क्रियान्वित करने में प्राण पण से लग जायें। जिसके हाथों इस संकल्प की एक प्रति पड़ जाय वह उसकी दस कापियाँ हाथ से बनाकर बाँटे और पढ़कर सुनाएँ।

हमारा विश्वास है कि इस संकल्प के क्रियान्वन से पूरे देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन बहुत शीघ्र लाया जा सकता है। शहरों का मोटापा कम होकर गाँवों की सेहत ठीक बन सकती है, अर्थतंत्र का विकेन्द्रीकरण कर गरीब जनता को खुशहाल बनाया जा सकता है, शहरी गंदी बस्तियों में हिराकत की जिन्दगी बसर कर रहे ग्रामवासियों को, देश की गरीबी दूर होने पर वापस अपने गाँव लौटने को राजी किया जा सकता है और भारत राष्ट्र पुनः विश्व में अपना सर ऊँचा उठाकर विश्वशान्ति और प्रगति का प्रतीक और माध्यम बन सकता है। भारत पुनः जगद्गुरु का पद प्राप्त कर सकता है।

हम देशवासी कहाँ तक इस प्रयास में सफल होते हैं, इसकी समीक्षा सन् 2001 अर्थात् अगली सहस्राब्दि और इक्कीसवीं सदी के प्रथम महाकुभं के अवसर पर की जायेगी।

नवयुग फिर आएगा कब, जन–जन यह चाहेगा जब

इक्कीसवीं सदी – उज्जवल भविष्य

जय भारत–जय जगत्

नाम	पता	हस्ताक्षर	नाम	पता	हस्ताक्षर